विषस्यविषमौषधम्

भारतेंदु हरिश्चंद्र

नाटक

विषस्यविषमौषधम्

भारतेंदु हरिश्चंद्र

विषस्यविषमौषधम्

प्रहसन

भाण

परतिय-रत रावन बध्यौ, पर-धन-रत तिमि कंस।
राम कृष्ण जय सूर ससि, करन मोह अघधंस ॥ 1 ॥

(भण्डाचार्य आता है)
भण्डाचाय्र्य : (लम्बी सांस लेकर)
"पर नारी पैनी छुरी, ताहि न लाओ अंग।
रावनहू को सिर गयो, पर नारी के संग ॥ 1 ॥
हमारी दशा भी अब रावण की हुआ चाहती है, तो क्या हुआ, होय।
रावन ने दस सिर दिए, जनक-नन्दनी-काज।
जौ मेरो इक सिर गयो, तो यामें कहं लाज ॥ 3 ॥

देखो पर-स्त्री संग से चन्द्रमा यद्यपि लांछित हैं तौ भी जगत को आनन्द देता है वैसे ही मोछों पर हाथ फेरकर, हम बड़े कलंकित सही पर हमी इस नगर की शोभा हैं। भला दुष्ट बाबाभट्ट क्या हुआ तुम ने हमारा सब भेद खोल दिया, इस भेद खुलने पर भी हम ने तुम्हैं और कृष्णाबाई, दोनों को न छकाया तो मेरा नाम भण्डाचाय्र्य नहीं। अब भी क्या खंडेराव का राज्य है कि पहलवानों की पूछ होगी अब तो जो कुछ हमीं लोग हैं ऊपर देखकर, क्या कहा कि 'इसी उपद्रव से न यह गति हुई' किसकी किसकी? महाराज मल्हार राव की? ए भाई जरा हाल तो कहे जाओ ऊपर देखकर, हैं चला गया, कौन गति हुई, इतना तो हमने भी सुना था कि कुछ दिन हुए एक खबीसन आई थी, क्या जानै कौन साहेब उसके मालिक थे। उं: अरे वह तो इसी बात पर न आई थी कि महाराज की भेड़ियां उन से अच्छी तरह नहीं चराई जातीं, तो फिर इस से क्या? अपनी नाक ठहरी चाहे जिधर फेर दिया और फिर उस का प्रबन्ध करने तो उनके साढ़े-तीन नातेदार आए न थे एक दादा दूसरा भाई तीसरा पति (नौरा) और आधी जीजी, क्या उनसे भी कुछ न हुआ ऊपर